15

विश्वामित्र-नदी संवाद

प्रस्तावना

जैसे किसी भवन की भित्ति होती है वैसे ही भारतीय संस्कृति की भित्ति वेद हैं। अत: संस्कृत साहित्य में वेदों का स्थान सबसे श्रेष्ठ है। भारत में धर्म व्यवस्था वेदाधारित ही है। वेद धर्म के निरूपण में स्वतन्त्र भाव से प्रमाण है, स्मृति आदि तो वेद मूलक ही हैं। अत: श्रुति और स्मृति के विरोध में श्रुति ही मान्य है। न केवल धर्म की मूलकता से ही वेद समादृत है, अपितु इस विश्व में सर्वप्राचीन ग्रन्थ भी ये ही हैं। प्राचीन धर्म समाज-व्यवहार-आदि के वस्तु ज्ञान के लिए श्रुति ही सक्षम है। ''विद्यन्ते धर्मादय: पुरुषार्था: यै: ते वेदा:''। सायण ने तो अपौरुषेय वाक्य को वेद कहा है। इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के परिहार के लिए जो अलौकिक उपाय बताता है वह वेद होता है। कारिका -

''प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।''

वेद चार होते हैं। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, और अथर्ववेद। वहाँ ऋग्वेद में अनेक रसपूर्ण संवाद सूक्तहैं। वैदिक कथा सहित्य में विश्वामित्र-नदी कथा एक अन्यतम कथा है। इस प्रकार ऋग्वेद में अनेक सूक्त कथोपकथन की प्रधानता वाले दिखते हैं। अत: यह कथोपकथन संवाद नाम से प्रसिद्ध है। कथोपकथन में विश्वामित्र-नदी कथा अतीव मनोरम है। यहाँ शुतुद्रु और विपाशा नदी की कथा है। उनकी सृष्टी की कारण क्या है। उनका सृष्टि कर्ता कौन है? विश्वमित्र के साथ नदीयों की क्या वार्ता हुई इत्यादि इस पाठ में प्रस्तुत है।

उद्देश्य

इस पाठको पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- वैदिक साहित्य का इतिहास जान पाने में;

टिप्पणी

- मुनि-ऋषीयों का चारित्रिक वर्णन जान पाने में;
- वैदिक युग में जो नदियाँ थी उनके विषय में जान पाने में;
- किस लिए नदीयों का सृजन किया उनका क्या कारण था जान पाने में;
- मन्त्र का संहिता पाठ जान पाने में;
- मन्त्र का पदपाठ जान पाने में;
- स्वयं ही मन्त्रों की व्याख्या कर जान पाने में;
- स्वयं ही मन्त्रों का अन्वय कर पाने में;
- मन्त्र में स्थित व्याकरण को जान पाने में;

15.1 मूलपाठ

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वेइव विषिते हासमाने।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते॥1॥

इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः।
समाराणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे॥2॥

अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वीं सुभगामगन्म।
वत्समिव मातरा संरिहाणे समानं योनिमनु संचरन्ती॥3॥

एना वयं पयसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः।
न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति॥4॥

रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः।
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषावस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः॥5॥

इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुरपाहन्वृत्रं परिधिं नदीनाम्।
देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः॥6॥

प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं 100 तदिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्चत्।
वि वज्रेण परिषदो जघानायन्नापोऽयनमिच्छमानाः॥7॥

एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि।
उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते॥8॥

ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन।
नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः॥9॥

आ ते कारा शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन।
नि ते नंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते॥10॥

यद्ङ्ग त्वा भरता संतरेयुर्गव्यन्ग्रामं इषित इन्द्रजूतः।
अर्षादह प्रसवः सर्गतक्त आ वो वृणे सुमति यज्ञियानाम्॥11॥

अतारिषुर्भरता गव्यवः समभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम्।
प्र पिन्वमाध्वमिषयन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पृणध्व यात शीभम्॥12॥

उद्व ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत।
मादुष्कृतौ व्येनसान्यौ शूनमारताम्॥13॥

15.1.1 व्याख्या

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वेइव विषिते हासमाने।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते॥1॥

पदपाठ- प्र। पर्वतानाम्। उशती इति। उपस्थात्। अश्वे इवेत्यश्वेऽइव।
विसिते इति विऽसिते। हासमाने इति॥ ग्रावाऽइव। शुभ्रे इति।
मातरा। रिहाणे इति। विऽपाट् शुतुद्री। पयसा। जवेते इति॥1॥

अन्वय- पर्वतानाम् उपस्थात् विपाट्शुतुद्री उशती, विषिते अश्वेइव, हासमाने शुभ्रे मातरा रिहाणे पयसा प्र जवेते।

व्याख्या -कुशिक पुत्र विश्वामित्र घूमते घामते विपाट और शुतुद्री नदियों के किनारे पहुंचे। उन नदियों में अगाध जल था। अतः नदियों को पार करने की इच्छा करने वाले विश्वामित्र ने नदियों से प्रार्थना की। प्रथम के तीन मन्त्रों द्वारा विश्वामित्र नदियों की स्तुति करते हैं। विपाट् (आधुनिक व्यास) और शुतुद्री (आधुनिक सतलज) ये दोनों नदियाँ पहाड़ से निकल कर पानी से भरपूर होकर वेग से समुद्र की तरु उसी प्रकार दौड़ी जा रही हैं, जिस प्रकार दो घोड़ियाँ बन्धन से मुक्त होने पर प्रसन्नता के कारण हिनहिनाती हुई इधर-उधर वेग से भागती हैं, अथवा दो गायें अपने बछड़ों की तरफ वेग से दौड़ती हैं।।

सरलार्थ-

(विश्वामित्र नदी के प्रति कहते हैं कि) पर्वत की गोद से निकल कर (समुद्र को उद्देश्य करके) गमन लिप्सा से (परस्पर) स्पर्धिनी के रूप में दोड़ती हुई, दो घोड़ियाँ बन्धन से मुक्त होने पर प्रसन्नता के कारण हिनहिनाती हुई इधर-उधर वेग से भागती हैं, अथवा दो गायें अपने बछड़ों की तरफ वेग से दोड़ती हैं ऐसा प्रतीत होता है।

टिप्पणी

व्याकरण –

- शती-वश्-धातु से शतरि ङीप्। ग्रहिज्या इत्यादि सूत्र से संप्रसारण से उशती बनता है।
- उपस्थात्- उप पूर्वक स्था-धातु से क प्रत्यय में उपस्थ बनता है। उसके पञ्चमी एकवचन में।
- विषिते-वि पूर्वक षिञ्-धातु से क्त प्रत्यय में विषित। तथा उसका स्त्री लिङ्ग प्रथमा द्विवचन में यह रूप बनता है।
- हा समाने-हस्-धातु से शानच में हसमान। तथा उसके स्त्री लिङ्ग प्रथमा द्विवचन में यह रूप बनता है।
- शुभ्रे- शुभ्-धातु से र प्रत्यय करने पर स्त्रीलिङ्ग प्रथमाद्विवचन में यह रूप बनता है।
- रिहाणे- लिह धातू से शानच में लस्य छन्दसि आदेशे से न को ण आदेश से स्त्री लिङ्ग प्रथमा द्विवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- जवेते-जङ् धातु से लट् लकार प्रथम पुरुष द्विवचन में यह रूप सिद्ध होता है।

इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः।
समाराणे ऊमिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रेछ

पदपाठ- **इन्द्रेषिते इतीन्द्रऽइषइवे। प्रऽसवम्। भिक्षमाणे इति। अच्छ। समुद्रम्। रथ्याऽइव। याथः समाराणे इति सम्ऽआराणे। ऊर्मिऽभिः। पिन्वमाने इति। अन्या। वाम्। अन्याम्। अपि। एति। शुभ्रे इति**

अन्वय- इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाने समुद्रम् अच्छा रथ्येव याथः। (हे) शुभ्रे! समारणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने वाम् अन्या अन्याम् अति एति।

व्याख्या- हे नदीयों! 'इन्द्रेषिते' इन्द्र के द्वारा प्रेरित होकर 'सं आराणे' एक दूसरे के अनुकूल चलती हुई तथा 'उर्मिभिः पिन्वमाने' अपनी लहरों से आसपास के प्रदेशों को तृप्त करती हुई तथा 'प्रसवंभिक्षमाणे' उन उपजाऊ प्रदेशों में धान्य की उत्पत्ति को उत्तम बनाती हुई 'शुभ्रे' तेजस्वी तुम दोनों 'रथ्या इव' रथ से जाने वाले रथियों के समान 'समुद्रं अच्छा याथः' समुद्र की तरफ सीधी जाती हो। 'वां' तुम में से 'अन्या' एक'अन्यां अप्येति' दूसरी से मिलती है।

सरलार्थ-इन्द्र से प्रेषित, प्रवाह की भिक्षयित्री, और दो सारथियों की तरह समुद्र को उद्देश्य करके (तुम दोनों) दोड़ती है। हे शुभ्रजले, (तुम दोनों) यौग पद्य से जाती हो, ऊर्मियों के द्वारा दौड़ते हुए परस्पर परस्पर एक दुसरे के प्रति जाती हैं।2

व्याकरण –

- इन्द्रेषिते- इन्द्रेण इषिते, इष्-धातु से क्त प्रत्यय इडागम करने पर यह रूप सिद्ध होता है।
- भिक्षमाणे- भिक्ष-धातु से शानच करने पर यह रूप सिद्ध होता है।

- प्रसवम्- प्रपूर्वक सू-धातु से अप्प्रत्यय करने पर प्रसव सिद्ध होता है।
- रथ्या- रथ्यास्य इदम् तस्येदम् इस अर्थ में रथाधत् इस सूत्र से यत् प्रत्यय करने पर रथ्य सिद्ध होता है।
- याथ:-या-धातु से लट् लकार मध्यम पुरुष द्विवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- समाराणे-सम्पूर्वक आपूर्वक ऋ गतौ धातु से कानच में गुण में यह रूप सिद्ध होता है।
- पिन्वमाने-पिवि धातु से शानच् नमागम मुकागम में यह रूप बनता है।

अच्छा सिन्धु मातृतमामयासं विपाशमुर्वीं सुभगामगन्म।
वत्समिव मातरा संरिहाणे समानं योनिमनु संचरन्ती॥3॥

पदपाठ- **अच्छ। सिन्धुम्। मातृऽतमिम्। अयासम्। विऽपाशम्। उर्वीम्। सुऽभगाम्। अगन्म वत्सम्ऽइव। मातरा। संरिहाणे इति सम्ऽरिहाणे। समानम्। योनिम्। अनु। संचरन्ती इति सम्ऽचरन्ती॥3॥**

अन्वय- मातृतमां सिन्धुम् अच्छ अयासम्, उर्वीं सुभगां विपाशाम् अगन्म। मातरा वत्समिव संरिहाणे समानं योनिम् अनु सञ्चरन्ती (अगन्म)।

व्याख्या-जिस प्रकार दो गाये बछड़े को चाटती है उसी प्रकार एक ही उदिष्ट स्थान समुद्र की तरफ दौड़ती आती जाती है इनमे अत्यंत प्यार से युक्त तथा समुद्र की तरु बहने वाली शतुद्री के पास गया और अति विशाल और उत्तम ऐश्वर्यवाली विपाशा के पास भी गए।

सरलार्थ - जिस प्रकार दो गाये अपने बछड़े को चाटने के लिए उसकी तरफ भागती है उसी प्रकार ये दोनों नदिया अपने एक ही उदिष्ट स्थान समुद्र की तरु भागती है ये दोनों ही माता के समान लोगों का पालन करती है विशाल और ऐश्वर्यशाली हैं।

व्याकरण

- मातृतमाम्-अतिशयेन मातरम्। अतिशय अर्थ में तमप् प्रत्यय है।
- अयासम्- या-धातु से लुङ् लकार उत्तम पुरुष एकवचन में।
- सुभगाम्- शोभन: भग: यस्या: ताम्।
- संरिहाणे- सम्पूर्वक लिह्-धातु से शानच करने पर लकार के स्थान में रकार आदेश और नकार के स्थान में णकार करने पर।
- अगन्म- गम्-धातु से लुङ् उत्तम पुरुष द्विवचन में यह रूप बनता है।
- सञ्चरन्ती- सम्पूर्वक चर्-धातु से शतरि ङीप् करने पर प्रथमा द्विवचन में यह रूप बनता है। पदान्त ईकार प्रगृह्य है।

पाठगत प्रश्न

165. पर्वत की गोद से कौन सी नदी प्रवाहित होती है?

166. कौन इस प्रकार की नदी प्रवाहित किया गया है?

167. पिन्वमाने इसकी व्युत्पत्ति लिखो।

168. इन्देषिते इसका क्या अर्थ है?

169. विपाशा नदी के तट पर कौन आये?

170. संरिहाणे इसकी व्यत्पत्ति लिखो।

एना वयं पयसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः।
न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः कियुविप्रो नद्यो जोहवीति॥4॥

पदपाठ- **एना। वयम्। पयसा। पिन्वमानाः। अनु। योनिम्। देवऽकृतम्। चरन्तीः न। वर्तवे। प्रऽसवः। सर्गऽतक्तः। किम्ऽयुः। विप्रः। नद्यः। जोहवीति॥4॥**

अन्वय- एना वयं पयसा पिन्वमाना देवकृतं योनिम् अनु चरन्तीः। सर्गतक्तः प्रसवः न वर्तवे। किंयुः विप्रः नद्यो जोहवीति।

व्याख्या-इसी प्रकार स्तुति में नदी विश्वामित्र के प्रति कहता है। हम नदियाँ इस पानी से प्रदेशों को तृप्त करती हुई देव के बताए गए स्थान की तरफ चली जा रही है बहने के काम में रत रहने वालो हम अपने उद्योग से कभी विराम नहीं लेती हैं फिर यह ब्राह्मण नदियों की क्यों स्तुति कर रहा है।

सरलार्थ- (इस प्रकार की स्तुति करते हुए विश्वामित्र के प्रति नदिया कहती हैं की) इस प्रकार की हम (नदियां) अपनी जलधारा से इन्द्र के द्वारा निर्मित समुद्र की तरफ जाती हैं। स्वभाव से प्रवाहित होने से हमारी गति रोकी नही जा सकती है हमारी गति बिना रुकावट के है। कैसे यह ऋषि नदी की बार-बार स्तुति करता है।

व्याकरण -

- एना- इदम् शब्द का तृतीया एकवचन में, विभक्ति इसको आदेश होने पर।
- देवकृतम्- देव के द्वारा किया गया। कृ-धातु से क्त प्रत्यय करने पर।
- वर्तवे- वृ-धातु से तवेन प्रत्यय करने पर। (वैदिक रूप है)।
- प्रसवः -प्रपूर्वक षू-धातु से अप् प्रत्यय करने पर।
- सर्गतक्तः - सर्गे तक्तः। सृज्-धातु से घञ् प्रत्यय करने पर सर्ग। तक् +क्त।

टिप्पणी

- कियु:- किम् इच्छन् इस अर्थ में क्यच् प्रत्यय करने पर। क्य छन्दसि इससे उ प्रत्यय करने पर।
- जोहविति- पुन: पुन: ह्वयति। यङ् प्रत्यय करने पर द्वित्व होने पर अभ्यास में ज आदेश गुण करने पर संप्रसारण में इडागम गुण और अव आदेश करने पर।

रमंध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवै:।
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषावस्युरह्वे कुशिकस्य सूनु:॥5॥

पदपाठ- **रमंध्वम्। मे। वचसे। सोम्याय। ऋतऽवरी:। उप। मुहूर्तम्। एवै: प्र। सिन्धुम्। अच्छ। बृहती। मनीषा। अवस्यु:। अह्वे। कुशिकस्य। सूनु:॥**

अन्वय- (हे) ऋतावरी: मे सोम्याम् वचसे मूहर्तम् एवै: उप रमध्वम्। कुशिकस्य सूनु: (अहम्) अवस्यु: बृहती मनीषा सिन्धुम् अच्छा प्र अह्वे।

व्याख्या-विश्वामित्र नदी के प्रति कहते है। 'ऋतावरी'। ऋत-जल को कहते है। उस प्रकार की हे नदियों आप 'मे' विश्वामित्र के सोम का सम्पादन के लिए आप प्रयत्न कीजिए। पञ्चमी अर्थ में तृतीया है। शीघ्र जाने के लिए 'मुहूर्त' मुहूर्तमात्र की आवश्यकता है। उपपूर्वक रमिरुप संहार अर्थ में है। क्षणमात्र शीघ्र जाना। सामान्य रूप से नदियों को समाहित करने वाली प्रयोजन करने वाली पुरोवति शुतुद्री के प्रति कहते है। 'कुशिक' राजर्षि का पुत्र मैं विश्वामित्र 'बृहती' महान 'मनीषा' मन से युक्त स्तुति 'अवस्यु:' आत्मा की रक्षा करने के लिए 'सिन्धु' शुतुद्री आपकी विशेष रूप से पूजा करता हूँ। यहाँ निरुक्त में कहा गया है -जल से परिपूर्ण नदियां 'थोड़ी देर के लिए सोम के लिए अथवा सोम संपादन के लिए रोक दीजिये। बहती हुई महान सिन्धु आपको मैं मन से प्रार्थना करता हुआ कुशिक का पुत्र आप को कुछ समय के लिए रुकने के लिए प्रार्थना करता हूँ। कुशिक नाम का राजा हुआ (निरु. 2/25) इति।।

सरलार्थ-(विश्वामित्र नदी के प्रति कहते है) हे नदियों मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ मैं आदर भावना से आपके रुकने के लिए प्रार्थना करता हूँ। आप हमारी हितैशी हो (मैं) कुशिक पुत्र (विश्वामित्र) उच्चै प्रकार से नदी (शुतुद्री का) आह्वान करता हूँ।

व्याकरण -

- ऋतावरी: -ऋतम् यस्या: सा इस अर्थ में मतुप् करने पर छन्दससीवनिपौ इससे वनिप करने पर, वनो र च इससे ङीप् करने पर वन के नकर को रादेश होने पर वा छन्दसि इससे दीर्घ होने पर। उसका सम्बोधन बहुवचन में यह रूप बनता है।
- एवै:- इण्-धातु से इणशीङ्भ्यां वन् इससे वन् प्रत्यय करने पर और गुण करने पर तृतीया बहुवचन में यह रूप बनता है।
- मनीषा-मन का स्वामी मनीषा।

टिप्पणी

- अवस्युः-अवः आत्मन इच्छति इस अर्थ में सुप् आत्मन क्यच् इससे क्यच् करने पर उसके बाद क्याच् छन्दसि इससे उ प्रत्यय करने पर अवस्युः यह रूप बनता है।

इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुरपाहन्वृत्रं परिधिं नदीनाम्।
देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः॥6॥

पदपाठ- **इन्द्रः। अस्मान्। अरदत्। वज्रऽबाहुः। अप। अहन्। वृत्रम्। परिऽधिम्। नदीनाम्॥**
देवः। अनयत्। सविता। सुऽपाणिः। तस्य। वयम्। प्रऽसवे। यामः। उर्वी॥6॥

अन्वय- वज्रबाहुः इन्द्रः अस्मान् अरदत्, नदीनां परिधि वृत्तम् अप अहन्। सुपाणिः सविता देवः (अस्मान्) अनयत्। वयं उर्वीः तस्य प्रसवे यामः।

व्याख्या-नदी प्रत्युत्तर में कहती है। हे विश्वमित्र, 'वज्रबाहुः' वज्र से युक्त जिसकी भुजा है वह वज्र बाहु। उस प्रकार का बलवान् 'इन्द्र' ने हम नदीयों का निर्माण किया है। रदति खनति कर्मा। इंद्र ने हमे खोदा। कैसे खोदा इस विषय में कहते है। नदियों को सिमित करने वाले वृत्र को मारो। वरण करने वाले आकाश को वृत्र मेघ कहते हैं। उस प्रकार के मेघ को मारो। उसके मरने पर जल गिरता है। उस प्रकार के मेघ से हमारा निर्माण होता है। इस प्रकार से मेघ के मारने पर हम नदियों का निर्माण किया है। केवल उसने हमारा निर्माण ही नहीं किया, अपितु 'सविता' सभी जगत के प्रेरक'सुपाणिः' शोभन हाथ से हमारी उत्पत्ति की गई है, प्रकाशमान देव इन्द्र हमको लेकर जाते हैं। बादलों को भेद करके उसने हम को जल से परिपूर्ण समुद्र को पूर्ण करो। 'उस प्रकार के सामर्थ्य वाले इन्द्र हम को जल से परिपूर्ण करके ले जाता है। उक्त अर्थ में यास्क कहते है - 'इन्द्र ने हाथ में वज्र धारण किया हुआ है। रदति खनति कर्म। उसने वृत्र को मारकर जल का निर्माण किया है। देवो को ले जाने वाले सुंदर हाथ वाले कल्याण कारी इन्द्र है। 'पाणिः पणायतेः पूजाकर्मणः प्रगृह्य पाणी' देवो की पूजा करता है। उसकी आज्ञा से हम प्रवाहित होती है' (निरु. 2/26) इति।

सरलार्थ- हाथो में वज्र को धारण करने वाले इन्द्र ने हम (नदी) को बहाया है। वह (इन्द्र) नदियों के गति में बाधा डालने पर वृत्र(मेघ) को मारा है। सुन्दर हाथों से युक्त इन्द्र हम नदियों को ले जाता है। हम (नदि) उस(इन्द्र की) आज्ञा से ही बहते है।

व्याकरण -

- अरदत्- रद्-धातु से लङ् प्रथम पुरुष एकवचन में।
- अनयत्-नी-धातु से लङ् प्रथम पुरुष एकवचन में।
- यामः-या-धातु लट् प्रथम पुरुष एकवचन में।

पाठगत प्रश्न

171. नदियाँ कहाँ पर जाती है?

टिप्पणी

172. ऋषि नदी की स्तुति क्यों करता है?

173. भरताः इसका क्या अर्थ है?

174. शीभम् इसका क्या अर्थ है?

175. वज्रबाहु कौन है?

176. वृत्र कौन है?

प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं 100 तदिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्चत्।
वि वज्रेण परिषदो जघानायन्नापोऽयनमिच्छमानाः॥7॥

पदपाठ– **प्रऽवाच्यम्। शश्वधा। वीर्यम्। तत्। इन्द्रस्य। कर्म। यत्। अहिम्। विऽवृश्चत्॥ वि। वज्रेण। परिऽसदः। जघान। आयन्। आपः। अयनम्। इच्छमानाः**

अन्वय– इन्द्रस्य तत् वीर्यं कर्म यदलह विवश्चत् शश्वधा प्रवाच्यम्। वज्रेण परिषदः वि जघानः (तदनन्तरम्) आपः अयनम् इच्छमानाः आयन्।

व्याख्या–जो यह इन्द्र है इसने 'अहि राक्षस को मारा, इन्द्र का वह कर्म और बल अनेक तरह से वर्णन करने योग्य है। जब इन्द्र ने अपने वज्र से चारो स्थित असुरों को मारा, तब जल प्रवाह अपने स्थान से समुद्र की इच्छा करता हुआ बहने लगा।।

सरलार्थ–इन्द्र के वे पराक्रमशालि कार्य है जो उसने अहि(वृत्र को) मारा, वह (प्रशंसनीय) ही है। वह वज्र से (जल का प्रतिबन्धक) मेघ को काट डाला। जल अपने मार्ग का अन्वेषण करता हुआ बहाने लगा।

व्याकरण –

- प्रवाच्यम्– प्र पूर्वक वच्–धातु से ण्यत् प्रत्यय करने पर।
- वीर्यम् – वीर्–धातु से यत् प्रत्यय करने पर।
- विवृश्चत् – व्रश्च्–धातु लङ प्रथम पुरुष एकवचन में।
- परिषदः – परि पूर्वक सद्–धातु से क्विप करने पर।
- जघान– हन्–धातु से लिट् प्रथम पुरुष एकवचन में।
- आयन्–इ–धातु से लङ् प्रथम पुरुष बहुवचन में।
- इच्छमानाः –इष्–धातु से शनच् प्रथमा बहुवचन में।

एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि।
उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्र नमस्ते॥8॥

पदपाठः– **एतत्। वचः। जरितः। मा। अपि। मृष्ठाः। आ। यत्। ते घोषान्। उत्ऽतरा। युगानि उक्थेषु। कारो इति। प्रति। नः जुषस्व। मा। नः। नि। करिति कः। पुरुषऽत्रा। नमः। ते॥8॥**

टिप्पणी

अन्वयः- (हे) जरितः एतद् वचः मा अपि मृष्ठाः यत्ते आ घोषान् उत्तरा युगानि। हे कारो उक्थेषु नः प्रति जुषस्व। मा नः पुरुणत्र नि कः, ते नमः।

व्याख्या-हे(जरितः)स्तोता ! (तेएतत् वचः)अपनी यह स्तुति (मा अपि मृष्ठाः) कभी भूलना मत। (यत्) क्योंकि (उत्तरा युगानि)आगे आने वाले समय में (घोषान्) यह स्तुति प्रसिद्ध होगी हे (कारो) स्तुति करने वाले (उक्थेषु नःप्रति जुषस्व)यज्ञों में हमारी प्रशंसा कर, (पुरुषत्र) पुरुषों के द्वारा प्रवतित कर्मों में (नःमा नि कः)हमारा अनादर मत कर, (तेनमः) तुझे नमस्कार है।।

सरलार्थ-हे स्तुति गायक, इस वाणी का तू कदापि विस्मरण मत कर जो भावी युग के मानव हैं वे इस वचन को सुन सके। हे कवि, स्तुति से मेरा आदर कर। (उक्ति-प्रत्युक्ति से) मनुष्यकोटी में हमें नीचे (नदीः) मत ले जा।8।

व्याकरण -

- जरितः-जृ-धातु से तृच् के सम्बोधन में।
- मृष्ठाः-मृष्-धातु से लुङ् मध्यम पुरुष एकवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- घोषान्- घुष्श्रवणे धातु से लट् लकार प्रथमपुरुष बहुवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- कारो- कृ-धातु से उणादी से सम्बोधन में यह रूप सिद्ध होता है।
- जुषस्व- आत्मनेपदी जुष्-धातु से लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन में यह रूप बनता है।
- कः -कृ-धातु से लुङ् में मध्यम पुरुष एकवचन में यह वैदिक रूप बनता है।
- पुरुषत्र- सप्तम्यर्थ देवमनुष्य पुरुमतर्येभ्यो द्वितीयसप्तम्योर्बहुलम् त्रा प्रत्यय से सिद्ध होता है।

ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन।
नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः॥9॥

पदपाठः- **ओ इति। सु। स्वसारः। कारवे। शृणोत। ययौ। वः। दूरात्। अनसा। रथेन नि। सु। नमध्वम्। भवत। सुऽपाराः। अधः ऽअक्षाः। सिन्धवः। स्रोत्याभिः॥9॥**

अन्वयः- ओ स्वसारः कारवे सु शृणोत, दूरात् अनसा रथेन वः ययौ। हे सिन्धवः स्रोत्याभिः निनमध्वम्, अधोअक्षाः सुपाराः भवतः।

व्याख्या-हे (स्वसारः सिन्धवः)भगिनी रूपी नदियों तुम (सु शृणोतु) मेरी बात अच्छी तरह सुनो, मैं (वः) तुम्हारे पास (दूरात् अनसा रथेन ययौ) बहुत दूर से वाहन और रथ से आया हूँ, अतः तुम (कारवे) स्तुति करने वाले मेरे लिए (स्रोत्याभिः नि सु नमध्वं) अपने प्रवाहों के साथ अच्छी तरह झुक जाओ, (सुपाराः)आसानी से पार करने योग्य हो जाओ, (अधोअक्षाः) रथ की धुरा से भी नीचे हो जाओ।।

सरलार्थ- (उसके बाद विश्वामित्र ने नदीयों को कहा) हे नदियों, (मेरी) कवि की वाणी ध्यान से सुनो (क्योंकि) वह तेरे समक्ष बहुत दूरसे रथ के द्वारा आया हुआ है। अपनी जलधारा को हे प्रवहमान नदियों रथ की धुरी से नीचे ले लो, जिससे रथ तरण योग्य हो।9।

व्याकरण-

- ओ- सम्बोधन वाचक निपात।
- शृणोत- श्रु-धातू के लोट् लकार मध्यमपुरुष बहुवचन में यह रूप बनता है।
- ययौ- या-धातु से लिट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन में यह रूप बनता है।
- नमध्वम्- नम्-धातु के लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- भवत- भू-धातू के लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन में यह रूप बनता है।

पाठगत प्रश्न

177. इन्द्र ने किससे वृत्र को मारा?

178. शश्वधा का क्या अर्थ है ?

179. नदी से क्या प्रार्थाना की?

180. मापि मृष्ठाः का क्या अर्थ है?

181. विश्वामित्र किससे आये?

182. नदियों के प्रति विश्वामित्र ने क्या प्रार्थाना की।

15.1.2 मूलपाठ

आ तें कारा शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन।
नि तें नंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै तें॥10॥

पदपाठः- **आ। ते। कारो इति। शृणवाम। वचांसी। ययाथ। दूरात्। अनसा। रथेन नि। ते। नंसै। पीप्यमाऽइव। योषा। मर्यायऽइव। कन्या। शश्वचै। त इति ते॥10॥**

अन्वयः- (हे कारो) ते वचांसि शृणवाम (यत् त्वं) दूराद् अनसा रथेन ययाथ। पीप्याना इव योषा ते नंसै, मर्याय इव कन्या ते शश्वचैः।

व्याख्या-हे (कारो)स्तोता ! (तेवचांसि शृणवाम) हम तेरी प्रार्थनाओं को सुनती हैं, कि तुम (दूरात् अनसारथेनआ ययाथ) दूर से वाहन और रथ से आए हो। इसलिए जिस प्रकार

टिप्पणी

(पीप्याना योषा इव) बच्चे को दूध पिलाने वाली माता नम्र हो जाती है, अथवा (कन्यामर्यायशश्वचैः)कोई कन्या पुरुष को आलिंगन देने के लिए नम्र हो जाती है, उसी प्रकार हम (तेनि नंसै) तेरे लिए झुक जाती है।

सरलार्थ- हे कवे, हमने आपकी अनुज्ञा सुनी (क्योंकि) आप दूर से रथ के द्वारा आये हैं। जैसे स्तनवती माता (अपने पुत्र के लिए) और जैसे कोई बालक अपने पिता का आलिङ्गन करता है (वैसे ही) तेरे लिए मैं मेरे नीचे जा रही हूं (जल स्तर स्वल्प करती हूँ)।

व्याकरण -

- शृणवाम-शृ-धातु के लट् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन का वैदिक रूप है।
- ययाथ- या-धातु से लिट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन में यह रूप बनता है।
- नंसौ- नम्-धातु से लुङ लकार उत्तम पुरुष बहुवचन यह रूप सिद्ध होता है।
- श्वचैः -श्वच्-धातु से क्विप् में यह रूप सिद्ध होता है।

यदङ्ग त्वा भरता संतरेयुर्गव्यन्ग्रामं इषित इन्द्रजूतः।
अर्षादह प्रसवः सर्गतक्त आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम्॥11॥

पदपाठः- **यत्। अङ्ग। त्वा। भरताः। सम्ऽतरेयुः। गव्यन्। ग्रामः। इषितः। इन्द्रंजूतः अर्षात्। अह। प्रऽसवः। सर्गतक्तः। आ। वः। वृणे। सुऽमतिम्। यज्ञियानाम॥11।**

अन्वयः- अङ्ग यद् गव्यन् इन्द्रजूतः इषितः भरताः ग्रामः त्वा संतरेयुः सर्गतक्तः प्रसवः अर्षाद् अह। यज्ञियानाम् व सुमतिम् आ वृणे।

व्याख्या- विश्वामित्र ने नदी को उत्तर दिया। हे (अङ्ग)प्रिय नदियों !(यत्)जब (भरताः) भरण पोषण करने वाले मनुष्य (त्वा संतरेयुः)तुम्हें पार करना चाहें, तब (गव्यन् इषितः)तुम्हें पार करने की इच्छा से प्रेरित होकर अथवा (इन्द्रजूतः)इंद्र से प्रेरित होकर (ग्रामः) उन मनुष्यों का समूह (अहः) प्रतिदिन (सर्गतक्तः प्रसवः) बहने वाले प्रवाह को (अर्षात्) पार कर जाए। मैं (यज्ञियानां वः सुमलत आ वृणे)पूजा के योग्य तुम्हारी उत्तम बुद्धियों को मांगता हूँ।

सरलार्थः -हे (नदियों), (तुम्हारी अनुमति प्राप्त हो गयी, अतः) भरत वंशीय(हम) तुम्हें (नदी) पार करेंगे। (तुझसे) अनुज्ञा प्राप्त इन्द्र से प्रेषित समूह को पार करायेंगे। तुम्हारी गति स्वाभाविक रूप से चले। पूत सलिल का मैं समर्थन चहाता हूँ।11।

व्याकरण -

- सन्तरेयुः-सम् पूर्वक तृ-धातु से विधिलिङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- इन्द्रजूतः-इन्द्र से जूत।

- गव्यन्- गोः से क्यच् करने पर।
- अर्षात्- ऋष्-धातु से लेट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- वृणे- वृ-धातु के लट् लकार उत्तम पुरुष एकवचन में यह रूप सिद्ध होता है।

अतारिषुर्भरता गव्यवः समभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम्।
प्र पिन्वमाध्वमिषयन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पृणध्वं यात शीभम्॥12॥

पदपाठः- **अतारिषुः। भरताः। गव्यवः। सम्। अभक्त। विप्रः। सुऽमतिम्। नदीनाम् प्र। पिन्वध्वम्। इषयन्ती। सुऽराधाः। आ वक्षणाः। यात। शीभम्॥12॥**

अन्वयः- गव्यवः भरताः अतारिषुः। विप्रः नदीनाम् सुमतिम् सम् अभक्त। सुराधाः (यूयं) इषयन्तीः प्र पिन्वध्वम्, वक्षणाः आ पृणध्वम्, शीभं यात।

व्याख्या-(गव्यवःभरताःअतारिषुः) पार जाने वाले तथा भरण पोषण करने वाले मनुष्य नदियों के पार उतर गये,(विप्रःनदीनां सुमतिसमभक्त) ज्ञानी विश्वामित्र ने नदियों की उत्तम बुद्धि को भी प्राप्त कर लिया। अब, हे नदियों !(इषयन्तीःसुराधाः)उत्तम अन्नों को पैदा करके उत्तम ऐश्वर्य बढ़ाने वाली तुम (वक्षणाःप्र पिन्वध्वं)नहरों को पानी से भरपूर भर दो, (आ पृणध्वं)अच्छी तरह पूर्ण कर दो, और (शीभंयात) वेग से बहो।

सरलार्थः - पार जाने की इच्छा वाले भरत वंशीय पार उतर गये। ब्राह्मण ने नदियों का समर्थन अच्छी प्रकार से प्राप्त किया। शोभन धनवती (तुम) धन उत्पादन करती हुई अपने स्थान पर ही अच्छी प्रकार से बहो, प्लावित हों, वेग से बहो॥12॥

व्याकरण -

- आतारिषुः-तृ-धातु से लुङ् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- भक्त-भज्-धातु से लुङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- इषयन्तीः- इष्-धातु से णिच् में यह रूप सिद्ध होता है।
- पिन्वध्वम्- पिन्व-धातु से लोट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- पृणध्वम् -पृञ्-धातु से लोट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- यात- या-धातु से लोट् लकार मध्यम पुरुष बहुवचन में यह रूप सिद्ध होता है।

उद्व ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत।
मादुष्कृतौ व्येनसान्यौ शूनमारताम्॥13॥

पदपाठः- **उत्। वः। ऊर्मिः। शम्याः। हन्तु। आपः। योक्त्राणि। मुञ्चत। मा। अदुःऽकृतौ। विऽएनसा। अघ्न्यौ। शूनम्। आ। अरताम्॥13॥**

अन्वयः- आपः ऊर्मिः वः शम्या उद् हन्तु, आपः योक्त्राणि मुञ्चत। अदुष्कृतौ व्येनसौ अघ्न्यौ शूनताम् मा अरताम्।

टिप्पणी

व्याख्या-विश्वामित्र नदी से पुनः कहते हैं। हे नदियों (वःऊर्मिःशम्याःहन्तु)तुम्हारी लहर यज्ञ स्तम्भ से टकराती रहें, (आपःयोक्त्राणिमुञ्चत) तुम्हारे जल बैलों के जुक्षों को मुक्त करते रहें और इस प्रकार हे (अदुष्कृतौ वि एनसा अघ्न्यौ)कभी दुष्ट कर्म न करने वाली, पाप रहित और हिंसा के अयोग्य नदियों ! तुमसे (शूनंआरताम्)समृद्धि दूर न जाए।

सरलार्थ-हे नदियों प्रग्रह को छोड़ दो। दुष्कृति रहित पापर हित तिरस्कार के अयोग्य ये नदियाँ वृद्धि को प्राप्त न हो।13।

व्याकरण -

- हन्तु- हन् धातु से लोट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन में यह रूप बनता है।
- मुञ्चत- मुञ्च्-धातू से लोट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में यह रूप सिद्ध होता है।
- अरताम्- ऋ-धातु से लुङ लकार प्रथम पुरुष द्विवचन में यह रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न

183. प्र पिन्वध्वम् का क्या अर्थ है?

184. समभक्त का क्या अर्थ है?

185. उर्मिका अर्थ क्या है?

186. शून का क्या अर्थ है?

187. विश्वामित्र किसके राज पुरोहित थे?

188. विश्वमित्र किसके पुत्र थे?

189. विश्वामित्रने पौरहित्य से क्या प्राप्त किया?

190. विश्वामित्र किस नदी तट को प्राप्त हुए।

191. विश्वामित्र ने किस नदी तीर को प्राप्त किया।

192. विश्वामित्र नदी के समीप में क्या प्रार्थना की।

193. नदी का निर्माण किसने किया।

194. वृत्रासुर को किसने मारा।

7.2 विश्वामित्र-नदीसंवाद (संक्षेप से)

ऋग्वेद में अनेक रस पूर्ण संवाद सूक्त है। वैदिक कथा सहित्य में विश्वामित्र-नदी कथा एक

टिप्पणी

महत्वपूर्ण कथा है। इसी प्रकार ऋग्वेद में अनेक सूक्तो में कथनोपकथन की प्रधानता दिखाई देता है। कथनोपकथन को ही संवादनाम से प्रसिद्ध है। संवादविषय में पाश्चात्य पण्डितों के मत में भिन्नता दिखाई देती है। ड ओल्डेन वर्ग के मतानुसार से संवाद प्राचीन उपाख्यान का शेष भाग है। उसके मत के अनुसार से ऋग्वेद के उपाख्यान गद्यात्मक है। ड ज्रोदर आदि पण्डितों के मतानुसार से संवाद वैदिक नाटक का स्वरूप है। 'ड विन्टरनित्स' के मतानुसार से लोकगीत काव्य का यह स्वरूप है। काल में काव्य की उत्पत्ति और नवीन नाटकों की उत्पत्ति हुई है। इसी प्रकार भारतीय साहित्य इतिहास में संवादों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

इन संवादों में विश्वामित्र-नदी संवाद अन्यतम महत्वपूर्ण संवाद है। प्राचीनकाल में विश्वामित्र राजा सुदास के पुरोहित थे। विश्वामित्र पौरहित्य से प्राप्त धन को लेकर बैलगाड़ी से विपाशा नदी और शुतुद्री नदी के तट के समीप गए। और उसके बाद नदीपार जाने के लिए जैसे नदि का जलस्तर नीचे होता है, उसके लिए महर्षि विश्वामित्र नदि की स्तुति करते हुए कहते है - बंधन से मुक्त घोड़े जैसे दौड़ते है उसी प्रकार सागर के साथ संगम के लिए पर्वत की गोद से बहती हुई श्रेष्ठ नदी मात्र शुतुद्री विपाशा के समीप आया। तथा विशाल सुन्दर नदियो के तट को प्राप्त किया है। जैसे दो गायें एक ही बछड़े को चाटने के लिए उसकी तरफ दौड़ती हैं उसी प्रकार ये नदियाँ भी सागर संगम के लिए एक ही लक्ष्य में बहती रहती है इस प्रकार की नदियों के तट पर आये। इस प्रकार विश्वामित्र ने नदियो की स्तुति की है। तब विश्वामित्र को उदिष्ट करके नदियाँ कहती है -

नदी-

हम इन्द्रदेव के द्वारा निर्माण करने पर अपनी गति से बहते है। हमारी गति को मत रोकिये। इसका अर्थ है जब वृत्रासुर पृथ्वीनाश के लिए नदियों की प्रवाह धारा को रोक दिया है। तब इन्द्रदेव ने वृत्रासुर को मारकर पर्वत की गोद से इन नदियों का निर्माण किया है। तो फिर किसलिए ऋषि बार-बार नदी की स्तुति करता है। ऋषि पुत्र कुशिक अपनी रक्षा के लिए सोमयुक्त वाणी से नदी को कुछ क्षण के लिए रुकने के लिए प्रार्थना करते है। वज्र हाथों वाले इन्द्र ने नदियों को रोकने वाले वृत्तासुर को मारकर हमें बहने के लिए बाहर लेकर के आये है। इन्द्र ने अहि को मारा यह इन्द्र का पराक्रम युक्त कार्य अवश्य कथन योग्य है। यह ही विश्वामित्र ने नदियों के प्रति कहते है। नदी प्रत्युत्तर में कहते है - हे स्तोता इस स्तुति वचन को कभी भी मत भूलों क्योंकि भावि पुरुष आपके इस स्तुति वचन को सुन सकते है। हे ऋषि स्तुति से केवल मुझ को आदर मत दो अपितु मेरी स्तुति से अलौकिक शोभा भी दीजिये। मैं तुमको नमन करता हूँ। उस विश्वामित्र नदी को बहने के रूप में सम्बोधन करते हुए कहते है -हे सुन्दर बहनों अब मेरे वचन को सुनो, क्योंकि बहुत दूर से यान के द्वारा अथवा रथ के द्वारा अतिक्रमण करके मै तुम्हारे समीप आया हूँ। हे नदियों कुछ नीचे जाओ। अपनी जलधारा को अन्त अथवा कम करके तैरने योग्या होकर बहो -विश्वामित्र के वचन को सुनकर नदी वैसे हुई है। तब विश्वामित्र नदी को धन्यवाद देते हुए अपने परिवार सहित नदी को पार किया है, पार करने के बाद पुनः पूर्व के समान बहने के लिए नदी से प्रार्थना की।

टिप्पणी

इस प्रकार संवादसूक्त को नाटकीय ओजस्विता के साथ सम्पूर्ण परिपूर्ण तथा कलनात्मक दृष्टि से सुन्दर और सरल है।

पाठसार

प्राचीनकाल में विश्वामित्र राजा सुदास के पुरोहित थे। विश्वामित्र पौरहित्य से प्राप्त धन को लेकर बैलगाड़ी से विपाशा नदी के और शुतुद्री नदी के तट को प्राप्त किया है। अत: नदी पार जाने के लिए जिससे जाने के लिए नदी का जलस्तर नीच होता है उसके लिए महर्षि विश्वामित्र नदियों की स्तुति करते हुए कहते है - प्रबंधन से मुक्त घोड़े जिस प्रकार दौड़ते है उसी प्रकार आप भी सागर संगम के लिए पर्वत की गोद से निकलकर बहती हैं श्रेष्ठ नदी मात्र शुतुद्री विपाशा के तट पर गए। तथा विस्तृत सुन्दर नदी के तट को प्राप्त किया है। जैसे दो गाये एक ही बछड़े को चाटने के लिए उसकी और भागती हैं उसी प्रकार आप सागर संगम के लिए उसकी और दौड़ती है इस प्रकार नदि के तीर पर आये। इस प्रकार विश्वामित्र नदियों की स्तुति की गई है। तब विश्वामित्र को उदिष्ट करके नदिया कहती है -जब वृत्रा सुर पृथ्वीनाश के लिए नदियों की प्रवाह धारा को रोक दिया है। तब इन्द्र देव ने वृत्रासुर को मारकर पर्वत के अङ्क से इस नदी का निर्माण किया है। ऋषि पुत्र कुशिक अपनी रक्षा के लिए सोम युक्त वाणी नदी को क्षण के लिए रुकने के लिए प्रार्थना करता है। वज्र हाथ वाले इन्द्र नदी को रोकने वाले वृत्रासुर को मारकर नदियों को निर्विघ्न बहाता है। इन्द्र ने अहि को मारा यह इन्द्र के पराक्रमयुक्त कार्य को अवश्य कथन योग्य है। यह ही विश्वामित्र नदी के प्रति कहते हैं। नदी प्रत्युत्तर में कहती है हे स्तोता इस स्तुति वचन को कभी मत भूलना क्योकि भावि पुरुष आपकी इस स्तुति वचन को सुन सकते है। हे ऋषि आप केवल हमारी स्तुति से आदर मत करो और स्तुत्ति से अलौकिक शोभा प्रदान कीजिए। मैं तुमको नमन करता हूँ। उसके बाद विश्वामित्र नदी को बहन के रूप में सम्बोधन करते हुए कहते है -हे सुन्दर बहनों अब मेरे वचन को सुनो, क्योंकि बहुत दूर से यान अथवा रथ से अतिक्रमण करके मै तुम्हारे समीप आया हूँ। हे नदियों कुछ नीचे जाओ। अपनी जलधारा को अन्त में सङ्कुचित करके तैरने योग्य होकर बहो - विश्वामित्र के वचन को सुनकर नदी वैसे हुई। तब विश्वामित्र नदी को धन्यावाद देते हुए अपने परिजनो सहित नदी को पार करके और उसके बाद पार करने के बाद पुन पूर्ववत् बहने के लिए नदी से प्रार्थना की।

पाठान्त प्रश्न

195. अपनी भाषा से विश्वामित्र- नदी कथा को लिखो।

196. विश्वामित्र-नदी संवाद का सार संक्षेप से लिखो।

197. प्र पर्वतानामुशती....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

198. इन्द्रषिते प्रसवं भिक्षमाणे....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

199. अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

200. एना वयं पयसा....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

201. रमध्वं मे वचसे....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

202. इन्द्रो अस्माँ ....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

203. प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

204. ओ षु स्वसारः ....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

205. यदङ्ग त्वा भरताः....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

206. अतारिषुर्भरता....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

207. उद्वः ऊर्मिः शम्या....इत्यादि मन्त्र की व्याख्या करो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर भाग-1

208. विपाशा।

209. शुतुद्रु।

210. पिवि धातु से शानच् नमागम मुकागम करने पर

211. इन्द्र के द्वारा भेजे गये।

212. विश्वामित्र।

213. सम् पूर्वक लिह्-धातु से शानच लकार को रकार आदेश करने पर और नकार को णकार होने पर ये रूप बनता है

उत्तर भाग -2

214. समुद्र की तरफ।

215. पार जाने के लिए।

216. भरत कुल में।

217. शीघ्र।

218. इन्द्र।

219. मेघ।

टिप्पणी

उत्तर भाग -3

220. वज्र से।

221. सर्वदा।

222. यह स्तुति विलुप्त न हो जिससे भावी काल में भी लोग स्मरण करेंगे।

223. मा विस्मार्षी:।

224. रथ से।

225. जैसे नदी पारंगमन के लिए अधोगामी होती है।

उत्तरकूट-4

226. प्रकर्ष से तर्पण किया।

227. अच्छी प्रकार से प्रार्थना की।

228. तरङ्ग।

229. समृद्धि।

230. सुदास का।

231. कुशिक का।

232. धन।

233. रथ से।

234. शुतुद्रु और विपाशा का।

235. जैसे नदियों का प्रवाह स्तब्ध हो गया हो।

236. इन्द्र के द्वारा।

237. इन्द्र।

पन्द्रहवां पाठ समाप्त